विभिन्न कला शैलियों का वर्गीकरण

(जनजातीय कला, लोक कला, बाल कला, शास्त्रीय, आधुनिक कला)

जनजातीय कला

विश्व के विभिन्न भागों में निवास करने वाली आदिवासी वन्य जन–जातियों द्वारा रची गयी कला को जन–जातीय कला कहा जाता है। जनजातीय कला जैसा कि नाम से स्पष्ट है जनसाधारण अथवा क्षेत्र विशेष, जाति विशेष, द्वारा विशेष विषय पर आधारित कार्य कौशल। जनजातीय कला में अधिकांशतः धार्मिक प्रतीकात्मक संस्कृति के दर्शन होते है। प्रमुखतया वनवासियों द्वारा अथवा अतिसाधारण जनजीवन जीने वाले समुदाय वर्ग द्वारा अपनाया गया कला कौशल जो कि पर्व/त्योहार व ऋतु विशेष से सम्बन्धित होता है और वही समयान्तर में जनजातीय कला के रूप में जाना जाता है।

जनजातीय कला की जड़े मूलतः शहरी क्षेत्रों से दूर ग्रामीण वनवासियों अथवा कबीला संस्कृति से जुड़ी हुई है। इनकी अपनी ही एक संस्कृति, अपना समुदाय और अपने ही कानून व्यवस्थायें और नियम होते है। इनके जीवन में कम से कम आवश्यकतायें रहती है, जिसकी पूर्ति अधिकांशतः जंगलों की संपदा के उपयोग से हो जाती है। इन्हीं प्रवृतियों पर आधारित उनके उद्योग, कलात्मक उपकरण व कलात्मक वस्तुएँ व यंत्रों का विकास हुआ है। इनके रीति–रिवाज व परम्परायें भी इसी वातावरण की ही देन है। फलस्वरूप जाति विशेष द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली वस्तुओं जैसे– बर्तन, वस्त्रों, आभूषणों व अन्य काम में आने वाली वस्तुओं के साथ घरों की भित्तियों आंगन आदि को एक विशेष प्रकार से निर्मित व सज्जित किया जाता है। निर्माण व सृजन का वह कलात्मक स्वरूप परम्परागत पद्धति से पीढियों को भी हस्तान्तरित होता जाता है और वही कला के रूप में स्थापित हुआ है।

जनजातीय कला के वैश्विक उदाहरण मिलते है जिनमें चीन, स्पेन, उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, व भारत आदि देश प्रमुख है। दक्षिणी अफ्रीका के बाद सबसे ज्यादा जनजातियाँ वाले देश के रूप में भारत का नाम प्रमुख है। भारत में अधिकांश जनजातियाँ उत्तरी प्रदेशों जैसे– राजस्थान, आसाम, मिजोरम, मणिपुर, मेघालय, नागालैण्ड, त्रिपुरा, मध्यप्रदेश, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा, झारखण्ड, बिहार, महाराष्ट्र, गोवा एवं लक्षद्वीप में निवास करती है। भारत में मुख्यतया गोंड, संथाल, भील, लाहौल, साम्हौल, सहित तमाम छोटी बडी जनजातियाँ अपनी सांस्कृतिक विविधताओं के साथ पायी जाती है।

विश्व के विभिन्न प्रान्तों में पाई जाने वाली इन आदिवासी संस्कृतियो में मूलभूत एकता दिखाई देती है उदाहरण के लिए ज्यामितिक आलेखन और प्रकृति चित्रण।

सौन्दर्य और श्रृंगार की साज–सज्जा से लेकर रण–कौशल के युद्धाभ्यास तक और चित्रकारी शिल्पकला से लेकर कढाई–बुनाई की घरेलू कलाओं तक हर स्तर पर जनजातियों का यह समाज बेहद परिपक्व और सम्पन्न नजर आता है ।

''ई.आर.लीच.'' के अनुसार'' ''जनजातीय लोग कला की वस्तुओं का उपयोग धार्मिक उत्सवों निजी वस्तुओं की सजावट तथा मृत पूर्वजों की याद में स्मारक इत्यादि बनाने हेतु करते है।''

'मेलविकि', 'जैकब' तथा 'बर्नहर्ट जे.स्टर्न' ने अपनी पुस्तक 'जनरल एन्थ्रोपोलॉजी' में जनजातीय कला के निम्न तत्त्व बताये है–

1. चित्रकला एवं मूर्तिकला
2. संगीत तथा नृत्य
3. मौखिक साहित्य

वस्तुतः जनजातीय कला वैसे तो बहुत विस्तृत स्वरूप लिए हुए है किन्तु मुख्य रूप से इसके उदाहरण हम उपरोक्त तत्वों के आधार पर जान सकते है ।

1. चित्रकला एवं मूर्त्तिकलाः–

आदिवासी लोगों द्वारा विभिन्न उत्सवों पर मांगलिक चिन्हों से एवं प्राकृतिक दृश्यों से घर, आंगन, भित्ति पर चित्रों का निर्माण किया जाता है । जैसे मध्यप्रदेश में निवास करने वाली 'गौंड़ जाति' द्वारा सम्पूर्ण घर आंगन को सुन्दरता से चित्रित किया जाता है । 'गौंड' एवं 'मूड़िया' जनजाति में लोागें द्वारा सिर पर 'सींग लगाने की प्रथा है जिसे अनेक प्रकार के चित्रों व रंगो से कौड़ियों से सजाया जाता है । साथ ही ये जातियाँ

गौंड जनजाति चित्रकला

अपने हथियारों को भी सज्जित करती है। इसी प्रकार 'टोडा जनजाति' मिट्टी के बर्तनों पर विभिन्न प्रकार की चित्रकारी करते है ।

पश्चिमी बंगाल क्षेत्र की 'संथाल' जनजाति में विवाह–डोली पर चित्रकारी व सजावट करने की परम्परा है । इसी प्रकार उड़ीसा के समुद्रतट के निकट रहने वाले 'गंजम' जनजाति के मछुआरे मृत व्यक्तियों की अत्यन्त सुन्दर कब्रे बनाते है जो कि चित्रकारी से भरपूर होती है ।

राजस्थान की भील आदिवासी जनजाति द्वारा विवाह आदि अवसरों पर भित्ति चित्र बनाने की परम्परा है । 'मोरिया' और 'खजूरी' इस अवसर के प्रमुख चित्र है । भील जनजाति की चित्रकला 'पिथौरा कला' के रूप में जानी जाती है। इसी प्रकार आकर्षक कंघा निर्माण कला का उदाहरण संथाल जाति, मडिया जाति, ज्वांग व कुकी जनजातियों में मिलता है ।

अफ्रीका में मिट्टी व लकड़ी के आकर्षक मुखौटा बनाने की परम्परा मिलती है अमेरिका में जादू टोना से

अफ्रीका जनजाति मुखौटा कला

जुड़ी 'नवाजों मृण चित्र' परम्परा मिलती है । इसके साथ ही कई प्रकार के मृण शिल्प बनाने के परम्परागत उदाहरण भी अन्य जनजातियों में मिले है ।

इसके अतिरिक्त अंग गोदना कला सभी जनजातियों में देखने को मिलती है जिसमें वे अपने हाथ, कमर, पीठ, पैर, गर्दन आदि शरीर पर नुकीली सुई से नामकरण व अन्य तंत्र मंत्र

से जुड़े चित्र बनवाते है ।

2. संगीत तथा नृत्य–

जनजातीय समाजों में संगीत तथा नृत्य का भी अत्यधिक महत्त्व रहा है जो जनजातीय जीवन के अभिन्न अंग है । अनेक धार्मिक एवं सामाजिक पर्वों के अवसरों पर जनजातीय स्त्री–पुरूष एवं बच्चे एकत्रित होते है

और संगीत व नृत्य का आयोजन किया जाता है ।

जिसमें 'थारू' जनजाति का 'थारू नृत्य' 'गौंड़' जनजाति का 'कर्मनृत्य', 'कोनयक नागाओं जनजाति में

आसाम का बिहू नृत्य

'युद्ध नृत्य', 'उराँव' जनजाति में 'पैकी नृत्य', 'खड़िया' जनजाति का 'शिकार–नृत्य' एवं 'आसाम' की जनजातियों का 'बिहु नृत्य' तथा मध्य प्रदेश की जनजातियों में 'बस्तर जनजाति' का नृत्य आदि उल्लेखनीय उदाहरण है

3. मौखिक साहित्य–

जनजातीय समाजों में कल्पनाओं एवं दंत कथाओं को नाटक के रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है । समस्त लोग एक जगह समूह में एकत्रित हो जाते है तथा संगीत एवं नृत्य के साथ नाटक रूप से प्रकट किया जाता है । नाटक के साथ–साथ जनजातीय समाज में कहावतों व पहेलियों का भी प्रचलन है, जो कि इनकी सांस्कृतिक धरोहरों के रूप में मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है ।

वस्तुतः विश्व की सभी ललित कलाओं का मूल यही आदिम और आदिवासी कला है । जहाँ से कलाकार आज भी नवीन प्रेरणा लेता है । जनजातीय कलाएँ अत्यन्त विधिताओं से पूर्ण है चित्र, मूर्त्ति के साथ–साथ अनेक सुन्दर बुनाई, आभूषण निर्माण के भी अनेक सुन्दर उदाहरण मिलते है । इन सभी में मूलभूत विशेषताएँ समान है जिन्हें हम इस प्रकार समझ सकते है :–

1. पौराणिकता और आनुष्ठानिक परम्परा युक्त
2. अंलकरण प्रधानता
3. सहजता और रीति–रिवाज आधारित
4. प्रकृति चित्रण एवं ज्यामितिक आकारों की अभिव्यक्ति

लोक कला – (Folk Art)

लोक–कला जन साधारण की भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। सभ्यता के विकास के क्रम में जहाँ एक ओर वह आदिम कला से जुड़ी रही है, वही दूसरी ओर सुसंस्कृत कला के मध्य स्थित रही है। इस कला को मुख्यतः ग्रामीण जनता से सम्बंधित किया जाता है, क्योंकि वस्तुतः इस कला को आगे बढाने का कार्य ग्रामीण जनता ने ही किया है। अतः सामान्यतः कला परम्पराओं के दो भेद रहे है–

1. लोक कला या निम्न धारा
2. शास्त्रीय कला या उच्च धारा

विश्व की सभी अर्थव्यवस्थाएँ मूलतः ग्रामीण व कृषक वर्ग की थी। गाँव के चारों ओर ही उनका जीवन घूमता रहता था इसी परिवेश में लोगों की कल्पना तथा दृष्टि का मुख्य स्वरूप निर्माण होता रहा। जाति, व्यवस्था में ही उनका जीवन परिचालक था। अधिकांश लोगों के जीवन का आधार आवश्यकता की पूर्त्ति करना था। ये लोग निरंकुश थे इनमें वृद्धि का अभाव था। ये लोग (ग्रामीण) गीतों, नुक्कड़–नाटकों, सामाजिक व धार्मिक उत्सवों प्राचीन पारपंरिक रीतियों का पालन करते हुए अपने सहज जीवन के क्रिया–कलापों की अभिव्यक्ति करते थे।

इस प्रकार की सहज अभिव्यक्ति से एक ऐसी संस्कृति व्यवस्थित होती चली गई जो अपनी आकाक्षांओं अपनी खुशियों को गीतों, शिल्पों व चित्रकारी के माध्यम से सहेजने लगी। धीरे–धीरे यह अभिव्यक्ति संस्कारगत वंशानुगत होती गई और लोक कला के स्वरूप में प्रकट होने लगी। चूंकि ये लोग निरक्षर थे इसलिए इनके नाटक, कविताएँ व अन्य कलाएँ लिपिगत नहीं हुई। किन्तु संगीत व चित्रकला की भाषा में अक्षरज्ञान का महत्त्व नहीं है इसलिए वह सदैव पल्लवित व विकसित होती है।

ये लोक कलाएँ बदलते समय व स्थितियों में स्वयं को समय से जोड़ती रही है। कभी–कभी लोक कलाएँ और जनजातीय कलाएँ एक रूप में स्वीकार की जाती है लेकिन दोनों में बहुत सूक्ष्म अन्तर है। आदिवासी कला या जनजातिय कला व्यक्ति विशेष अथवा जातिगत विशेषताओं के अधीन विकसित होती है किन्तु लोक कलाएँ मानव समूह की स्वीकृति है, ये लोक सापेक्ष होती है। उसमें निहित भावनाएँ किसी एक व्यक्ति सें सम्बधित न होकर समाज से सम्बधित होती है। लोक कलाएँ प्रमुख रूप से स्थानीय होती है। स्थानीय परम्पराओं की दृढ़ता के कारण इस कला में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री भी प्रमुखतया स्थानीय व आचंलिक होती है।

लोक कला समूह की कला है जिसमे सारे समूह द्वारा किया गया सृजन भी एक समान विशेषताओं वाला अथवा एक सी प्रतीत रंग योजनाओं वाला होता है। लोक कला में मूलतत्व का सृजन प्रभावशील होता है। अतः इस प्रकार भारत के प्रत्येक प्रांत की अपनी एक निजी विशेषता है इन्हीं विभिन्नताओं में सृजन का विशेष गुण सबसे बड़ी समानता को व्यक्त करता है। भारत के प्रत्येक छोटे बड़े प्रांत की वैसे तो अनेकों लोक कलाएँ है लेकिन कुछ विश्वव्यापी पटल पर उभर कर प्रकट हुई है उनमें से प्रमुख लोक कलाएँ निम्न है ।

क्र.सं.	लोक कला का नाम	स्थान राज्य / क्षेत्र	प्रयुक्त साधन सामग्री	चित्र
1.	रंगोली	महाराष्ट्र	श्वेत, चमकदार पत्थर का चूर्ण कृत्रिम रंग सूखे रंग आदि ।	
2.	वरली चित्रांकन	महाराष्ट्र	नील, खड़िया, गेरू, मेहन्दी (हिना), पीली मिट्टी, (काजल) (काला)रंग, ईट का चूर्ण आदि ।	
3.	माण्डना	राजस्थान	हिरमिच (गेरू), खड़िया, चूना, रामरज(पीली मिट्टी), नील व अन्य गीले रंग ।	
4.	सांझी कला	उत्तर प्रदेश	स्थानीय मिट्टी, गोबर, चमकीले रंगीले कागज व पन्नियाँ आदि ।	
5.	फड़ चित्रांकन	भीलवाडा (राजस्थान)	पट्ट (कपड़ा),कागज व लकड़ी (काष्ठ) पर टेम्परा रंग, प्राकृतिक रंग व खनिज रंगों का प्रयोग ।	
6.	कलमकारी	आंध्र प्रदेश (द. भारत)	प्रमुखतः सूती वस्त्रों मुख्यतः कलम कपड़ा व रंग पर व सिल्क आदि पर कलम (बांस व खजूर के नुकीले ब्रश जानवर के बाल से तैयार) प्राकृतिक रंग एवं वर्तमान में एक्रलिक रंगो का प्रयोग ।	
7.	बंधेज	जोधपुर व जयपुर (राजस्थान)	सभी प्रकार के वस्त्र विभिन्न प्रकार से बांध कर (Tie and Dye) रंगो के घोल में डाल डिजाइन तैयार की जाती है	
8.	तंजौर चित्र	मैसूर (कर्नाटक)	सोने के पत्रों व कीमती व अर्द्धकीमती नग / नगीनों को उभार शिल्प में लगाकर रंग व आकार दिया जाता है	
9.	थेवा कला	प्रतापगढ़ (राजस्थान)	लाख,सोने, चांदी को औजारों से आकार देकर मुख्यतः बेल्जिअन कांच पर नक्काशी की जाती है ।	
10.	मधुबनी चित्र (मिथिला पेंटिग)	बिहार (मिथिला क्षेत्र)	कागज,कपड़े पर ब्रश, नुकीले पेन अथवा हाथ से प्राकृतिक व कृत्रिम सभी रंगों को प्रयुक्त कर सुन्दर अंलकरण	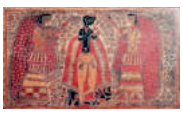

क्र.सं.	लोक कला का नाम	स्थान राज्य / क्षेत्र	प्रयुक्त साधन सामग्री	चित्र
11.	अजरख प्रिंट	बाड़मेर (राजस्थान) एवं कच्छ (गुजराज)	मुख्यतः वनस्पति, व प्रकृतिक रंगों में लाल कत्थई व नीले रंगों को प्रयुक्त किया जाता है । सूती व सिल्क के वस्त्रों पर हाथ से लकडी के ठप्पों से छपाई होती है ।	
12.	सांगानेर प्रिंट	जयपुर (सांगानेर) राजस्थान	बेल–बूटों की छपाई जिसमें दाखा बेल प्रसिद्ध है । यह छपाई मुख्यतः नीले रंग को सफेद कपड़े पर किया जाता है ।	

इसके अतिरिक्त विभिन्न मांगलिक अवसरों पर भारत के लगभग सभी छोटे–बड़े प्रान्त में 'मेहंदी' एक लोकप्रिय कला है। ग्रामीण स्त्रियों द्वारा पनघट में जाते वक्त घड़े को सिर पर स्थिर रखने के लिए 'इडाणी' प्रयुक्त की जाती है जिसे भी बहुत आकर्षक स्वरूप में मोतियों, धागों से निर्मित किया जाता है। चित्र व शिल्प के साथ–साथ लोक गीत–संगीत व नृत्य भी लोक कलाओं की विशिष्ट पहचान है। उदाहरण के लिए 'घूमर', कालबेलियाँ व 'चंवरी' नृत्य राजस्थान के प्रसिद्ध लोक नृत्य है। इसी प्रकार 'गरबा', गुजरात का, 'लावणी' नृत्य महाराष्ट्र का एवं 'भांगड़ा; पंजाब का प्रसिद्ध है।

लोक कलाओं का क्षेत्र अत्यन्त व्यापकता लिए हुए है चित्र, मूर्ति व अन्य शिल्प कलाओं के साथ–साथ दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं जैसे– टोकरियाँ, दरियाँ गलीचे (नमदे) वस्त्रों व बर्तनों आदि के क्षेत्रों में भी लोक कलाएँ सिरमौर है।

बाल कला – (Child Art)

बाल कला से तात्पर्य वह कला जो बाल कलाकारों द्वारा किया गया चित्र कर्म अथवा अन्य कलात्मक अभिव्यक्ति है। जिसमें कि कोमल बाल मन में उठने वालें भावों की उसके आस–पास घटित होते संसार की सुन्दर सहज कलात्मक प्रस्तुति है, इसी को बाल कला (Children's art अथवा or the art of Children) कहा है।

'बाल कला' का शाब्दिक प्रयोग व व्याख्या आधुनिक मनोवैज्ञानिक अध्ययन की खोज है। क्योंकि बाल मन सबसे कोमल, भावुक, अत्यन्त निर्दोष और पवित्र होता है और बच्चों द्वारा की गई अभिव्यक्ति भी बड़े–बड़े चितंनशील मन को भी सहज आकर्षित कर देती है बच्चों का भोलापन कला के संयोग से अधिक विकसित और प्रस्फुटित होता है। अतः बड़े–बड़े विद्वानों और मनोवैज्ञानियों ने बाल कला को प्रत्येक बच्चे के लिए अत्यन्त उपयोगी माना है। उदाहरण के लिए चित्रकला में सुन्दर आड़ी तिरछी रेखाएँ, रंग–बिरंगे आकर्षक विभिन्न रूप बच्चों को बहुत प्रभावित करते है उससे उनका संवेदनशील बाल मन अधिक क्रियात्मक बनता है।

बाल कला के विभिन्न रूप

बाल कला का सबसे पहले प्रयोग पाश्चात्य विद्वानों ने किया है जिनमें 'फ्रेंक सिजेक (Fzanz-Cizek) का नाम प्रमुख है।

सिजेक ने बाल कला अभिव्यक्ति के निम्न सात चरण माने है –

1. अस्पष्ट व घसीटेदार चित्रांकन – (दो से पांच वर्ष की अवस्था तक)
(Scribbling and smearing)
2. हाथों द्वारा भावों की लयात्मक अभिव्यक्ति (लगभग 4 वर्ष की अवस्था से आरम्भ)
(Rhythm of spirit and hand)
3. अमूर्त्त प्रतीकात्मक अंकन की अभिव्यक्ति (लगभग 6 वर्ष की अवस्था से आरम्भ)
(Abstract Symbolic stage)
4. विभिन्न आकारों का परिचय (7 से 8 वर्ष की अवस्था से आरम्भ)
(Introduction of types)
5. विभिन्न आकारों की विशेषताओं का प्रकटीककरण (9 से 10 वर्ष की अवस्था से)
(Introduction of characterstic)
6. विभिन्न रंगों, आकारों व अन्तराल विभाजन का विभक्तिकरण (11 से 14 वर्ष अवस्था से)
(Differentiation of colour, form and space)
7. आकारों की सही सामंजस्य पूर्ण अभिव्यक्ति (15 से 18 वर्ष की अवस्था)
(Pure Unity in forming and shaping)

कालान्तर में अनेक विद्वानों ने बाल कला पर अपने गहन अध्ययन प्रकाशित किये है। जिसके अतंर्गत बाल कला के मनुष्य के विकासशील अवस्था का प्रथम सोपान माना है और आदिम कलाकारों मानव की अभिव्यक्ति से जोड़ कर विस्तृत व्याख्याएँ दी है। संक्षेप में बाल कला एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसे वर्तमान आधुनिक कला और कलाकार द्वारा भी विशेष रूप से स्वीकारा गया है। प्रसिद्ध आधुनिक कलाकार 'पिकासों' ने कहा है कि 'प्रत्येक बालक एक कलाकार है (Every Child is an Artist)एक अन्य अध्ययन से यह भी कुछ विद्वान मानते है कि बालक रेखांकन में रूचि रखते है और बालिकाएँ अलंकरणात्मक चित्रण में अधिक रूचि लेती है। एक अन्य अमेरिकन अध्ययन के अनुसार बालिकाएँ बालकों की अपेक्षा चित्र निर्माण के प्रति अधिक

रूचि लेती है। सारांशतः कलाएँ बाल विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान में लगभग सभी विद्यालयों में चित्रकला (Art and Craft) की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है।

वर्तमान आधुनिक कला में कई कलाकार यह मानते है कि उनकी कला में 'बाल कला' के अंर्तदर्शन होते है। अर्थात् बालस्वरूप अभिव्यक्ति आज आधुनिक समकालीनकला में एक विशिष्ट शैली स्वरूप प्रकट होती है। 'अमूर्त्त कला' इसका एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। अमूर्त्त कला अर्थात् जिसमें विषय व आकार गौण अथवा नहीं होते बल्कि रंगों, रेखाओं व तानों का अद्‌भूत सामंजस्य चित्र के सौन्दर्यात्मक पक्ष को एवं भावों की अभिव्यक्ति का प्रकटीकरण है।

साराशंतः 'बाल कला' सिर्फ बालकों की सहज अभिव्यक्ति ही नहीं बल्कि बाल मन के मनाभावों और उस पर पड़ने वाले सकारात्मक और नकारात्मक दानों पक्षों को उजागर करने का सशक्त माध्यम है। साथ ही आधुनिक कला और कलाकारों द्वारा भी अपनी कला में विशेष स्थान दिया है।

शास्त्रीय कला (Classical Art)

कला अभिव्यक्ति की सर्वोत्तम परिणति अर्थात् सर्वश्रेष्ठ स्वरूप शास्त्रीय कला है। शास्त्रीय कला निश्चित सिद्धान्तों व निश्चित नियमों पर आधारित होती है। अतः इन नियमों व सिद्धान्तों की जानकारी एक कलाकार के लिए अत्यन्त आवश्यक होती है।

प्राचीन आदिम कला में से ही एक ओर लोक कला तथा दूसरी ओर शास्त्रीय अथवा सुसंस्कृत कला का विकास हुआ है। कला का यह स्वरूप समाज की विकसित अवस्था से सम्बन्धित है। जैसे–जैसे व्यक्ति और समाज की उत्ततरोत्तर उन्नति होती गई वैसे–वैसे कला अधिकाधिक बौद्धिक व जटिल बनने लगी। इसी को शास्त्रीय व सुसंस्कृत कला कहा जाता है।

शास्त्रीय कला वस्तुतः व्यक्तिनिष्ठ होती है। कलाकार स्वांतः सुखाय के लिए इस कला का निर्माण करता है जो कि कलाकार के गंभीर चिंतन–मनन का परिणाम होती है। शास्त्रीय कलाएँ जिन निश्चित विधियों व शैलियों पर आधारित होती है, उनमें कलाकार को तकनीकी रूप से दक्ष व निपुण होना आवश्यक होता है। अतः इस कला में सतत् अभ्यास के बिना चित्र के शैलीगत गुणों का विकास असंभव होता है। शास्त्रीय कला चूंकि शास्त्रीय नियमों से बंधी होती है और इन नियमों में कलाकार अपनी ओर से कोई परिवर्तन नहीं कर सकता। अब प्रश्न उठता है कि ये नियम क्या है?और इनका निमार्ण कब व किसने किया? वस्तुतः मानव विकास की सुन्दरतम् उपलब्धि 'कला' है। जैसे – जैसे सभ्यता विकसित हुई मानव जीवन परिष्कृत व सुसंस्कृत होता गया। तब वैदिक, पौराणिक उपनिषद् व कालान्तर में बड़े–बड़े साहित्य व शास्त्र लिखे गये और इनमें एक श्रेष्ठ नैतिक आदर्श जीवन का अभिन्न अंग 'कला' को स्वीकारा गया। कला की विस्तृत व्याख्या एवं नियम–उपनियम से सम्बधित अनेक ग्रंथों की रचना हुई है और यही नियम व सिद्धान्त शास्त्रीय कलाओं के आधार स्तम्भ है। जिन भारतीय शास्त्रीय ग्रंथों में चित्र–कर्म व शिल्पकला पर विशेष रूप से विचार किया गया है। उन ग्रंथों में भारतीय चित्रकला की प्राचीन समृद्धि का सहज ही परिचय मिलता है। उन ग्रंथों में 'चित्रसूत्र', 'चित्र–लक्षण', 'शिल्पशास्त्र', 'विष्णुधर्मोत्तर–पुराण', 'नाट्यशास्त्र' व 'कामसूत्र' आदि प्रमुख है।

प्रथम शताब्दी में 'वात्स्यायन द्वारा रचित 'काम–सूत्र' के चतुर्थ अध्याय 'आलेख्य' में चित्र के षडंगों

पर प्रकाश डाला गया है ये है – रूपभेद, प्रमाण, भाव, लावण्य–योजना, सादृश्य व वर्णिका भंग । षडंग के आधार पर बने भारतीय चित्रों का अत्युत्तम शास्त्रीय स्वरूप अजंता (महाराष्ट्र) के गुफाओं में बने भित्ति–चित्र हैं, जिसकी गुफा सं. 1 का चित्र 'बोधिसत्व पद्मपाणि' इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

इसी प्रकार 'भरतमुनि' द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र' में नृत्य व नाटक की कलाओं की विस्तार से व्याख्या की गई है। आगे चलकर लघु चित्र शैलियों जैसे– राजस्थानी, पहाड़ी व मुगल आदि में भी इन्हीं शास्त्रीय नियमों के दर्शन होते है।

भारत के समान चीन में भी चीनी चित्रकला का आधार स्तम्भ 4–5 वीं शताब्दी में 'शी–हो' द्वारा रचित चीनी कला के षड़ंग है।

इसी प्रकार पश्चिमी कला में यूरोप में 'यूनानी कला' (Greece Art) भी शास्त्रीय कला के नियमों पर आधारित रही है। उसे भी यूरोप में शास्त्रीय कला के रूप में उच्च स्थान मिलता है। कालान्तर में पश्चिमी कला में 14–15वीं शताब्दी का काल 'पुनर्नजागरणकला' के रूप में विख्यात है, इस काल में नवीन शास्त्रीय नियमों के आधार पर चित्रों व मूर्त्तियों की रचनाएँ हुई जो कि विश्व के उल्लेखनीय उदाहरणों में से एक है। इस काल के सर्वश्रेष्ठ कलाकार'लियोनार्दो–दा–विंसी' 'माइकल–एंजिलों' व 'राफेल' है।

इस प्रकार विश्व में समय–समय पर विभिन्न कला शैलियाँ नियमों व सिद्धान्तों के आधार पर विकसित हुई है जो कि 'शास्त्रीय कला' के रूप में जानी जाती है।

'बोधिसत्व पद्मपाणि',
गुफा सं.–1 अंजता

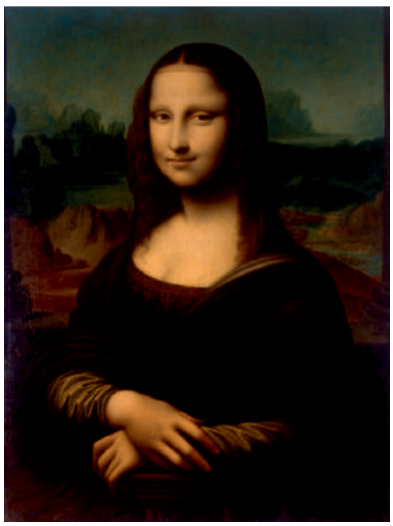

'मोनालिसा'– लियोनार्दो–दा–विंसी

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न –

1. असम की जनजाति का प्रमुख नृत्य कौनसा है?
   (अ) थारू (ब) पैकी (स) कर्म (द) बिहू
2. राजस्थान का कौनसा प्रदेश फड़ कला के लिए प्रसिद्ध है?
   (अ) जोधपुर (ब) बीकानेर (स) भीलवाड़ा (द) जयपुर।
3. 'बालकला' किससे सम्बंधित है?
(अ) बालकों से (ब) संस्कृत से (स) विज्ञान से (द) गणित से
4. भारत की प्रसिद्ध शास्त्रीय कला कौनसी है?
(अ) पटना शैली (ब) अजन्ता शैली
(स) लखनऊ शैली (द) मद्रास शैली
5. बंगाल शैली के प्रमुख अग्रणी कलाकार कौन है?
(अ) अवनीनन्द्रनाथ टैगौर (ब) मकबूल फिदा हुसैन
(स) अमृता शेरगिल (द) एन.एस. बैन्द्रे

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. गौंड जाति की प्रमुख कला कौनसी है?
2. सांझी कला का स्थान क्षेत्र कौनसा है?
3. बाल कला के 'सिजेक' विद्वान ने कितने चरण माने है?
4. अजन्ता का प्रसिद्ध भित्ति चित्र 'बोधिसत्व पद्मपाणि' कौनसी गुफा में बना है?
5. भारत में आधुनिक कला आंदोलन की शुरूआत कहाँ हुई?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. राजस्थान क्षेत्र किन्ही दों प्रमुख जनजातीय कलाओं के उदाहरण दीजिए।
2. रंगोली निर्माण में प्रयुक्त की जाने वाली प्रमुख सामग्री कौनसी है?
3. बाल कला के लिए आधुनिक कलाकार 'पिकासो' ने क्या लिखा है?
4. भारतीय कला के षडंगों के नाम क्या है?

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. जनजातीय कलाओं के प्रमुख तत्व क्या है?विस्तार से लिखिए ।
2. लोक कलाओं पर लेख लिखिए ।
3. बालकला की महत्ता विस्तार पूर्वक समझाइए।
4. शास्त्रीय कलाएँ क्या है? उदाहरणपूर्वक समझाए।
5. आधुनिक कला से क्या तात्पर्य है? विस्तार से लिखिए।

उत्तरमाला बहुचयनात्मक प्रश्न

1 (द) 2 (स) 3. (अ) 4 (ब) 5. (अ)